IWWAGE
Institute for What Works to Advance Gender Equality

LEAD LEVERAGING EVIDENCE FOR ACCESS AND DEVELOPMENT
KREA UNIVERSITY

जेंडर इन फोकस

जुलाई 2024 | श्रृंखला 8

प्रिय साथियों,

आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. की ओर से हार्दिक अभिनंदन!

मुझे आपके साथ "जेंडर इन फोकस" के आठवें संस्करण को साझा करते हुए खुशी हो रही है, जो कि *इंस्टीट्यूट फॉर व्हाट वर्क्स टू एडवांस जेंडर इक्वैलिटी (आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई.)* का न्यूज़लेटर है। "जेंडर इन फोकस" लैंगिक समानता को उजागर करने की हमारी प्रतिबद्धता का आधार रहा है, जिसमें कार्यबल में महिलाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

अर्थव्यवस्था में महिलाओं और लड़कियों की मदद करने के लिए गठित आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई., महिला सशक्तिकरण के लिए सामाजिक और आर्थिक नीतियों में सुधार पर केंद्रित रहा है। हम शोध, नीतिगत कार्य और परीक्षण समाधानों के माध्यम से ऐसा करते हैं। पिछले पाँच वर्षों में, हमने अपनी एक मजबूत पहचान बनाई है तथा भारत में सरकार, नागरिक समाज, चिकित्सकों और शोधकर्ताओं के साथ व्यापक नेटवर्क बनाए हैं।

अप्रैल 2023 में, हमने नीति और ज्ञान साझा करने पर केंद्रित एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम के माध्यम से अपनी पांचवीं वर्षगांठ मनाई। इस कार्यक्रम ने महिलाओं के विकास और कार्यबल भागीदारी में हमारे नेतृत्व को उजागर किया। इस मील के पत्थर ने एक पहल से एक संस्थान के रूप में हमारे विकास का मार्ग भी प्रशस्त किया है, और अब हमने खुद को **इंस्टीट्यूट फॉर व्हाट वर्क्स टू एडवांस जेंडर इक्वैलिटी** के रूप में पुनः स्थापित किया है।

"जेंडर इन फोकस" का यह संस्करण लिंग आधारित हिंसा, एसटीईएम में महिलाओं को सशक्त बनाने और देखभाल क्षेत्र में उभरती प्राथमिकताओं जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डालता है। इसमें हमारे नेटवर्क और गठबंधनों से प्राप्त अपडेट भी शामिल हैं। प्रत्येक लेख सार्थक परिवर्तन लाने और अधिक न्यायसंगत समाज की दिशा में कार्रवाई को प्रेरित करने के हमारे संयुक्त प्रयास को दर्शाता है।

मैं आपको अपने विचार साझा करने और लिंग-समावेशी नीतियों और प्रथाओं का समर्थन करने में हमारे साथ शामिल होने के लिए आमंत्रित करती हूँ। साथ मिलकर, हम एक बड़ा प्रभाव डाल सकते हैं और स्थायी परिवर्तन ला सकते हैं। आपके निरंतर समर्थन और सहयोग के लिए धन्यवाद।

सादर,

राधा चेलप्पा,
कार्यकारी निदेशक
इंस्टीट्यूट फॉर व्हाट वर्क्स टू एडवांस जेंडर इक्वैलिटी (आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई.)

पहल से संस्थान तक: लैंगिक समानता में आगे और सुधार लाने के लिए आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. की रणनीति

महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में पाँच वर्षों की उपलब्धियों का जश्न मनाते हुए

आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. की शुरुआत अर्थव्यवस्था में महिलाओं और लड़कियों को समर्थन देने की पहल के रूप में की गई थी, जिसका उद्देश्य 2018 से 2023 तक अनुसंधान, परीक्षण समाधान और समर्थन के माध्यम से महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए सामाजिक और आर्थिक नीतियों में सुधार करना था। अपनी स्थापना के बाद से, आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. ने भारत में लैंगिक मुद्दों पर काम करने वाले सरकारी समूहों, नागरिक समाज संगठनों, चिकित्सकों और शोधकर्ताओं के नेटवर्क के बीच अपनी साख और पहचान स्थापित करने में महत्वपूर्ण प्रगति की है।

अपनी पांचवीं वर्षगांठ मनाने के लिए, आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. ने 24 अप्रैल, 2023 को एक दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें महिलाओं की श्रम शक्ति भागीदारी पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य ज्ञान साझा करना और साक्ष्य के आधार पर नीतियों को बढ़ावा देना था। इसमें भागीदारों, जाने-माने सरकारी अधिकारियों, नीति निर्माताओं, सीएसओ, जमीनी स्तर के संगठनों, शिक्षाविदों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और गठबंधनों सहित आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. के हितधारकों ने भाग लिया। मुख्य भाषण भारत सरकार के मुख्य आर्थिक सलाहकार डॉ. वी. अनंतनारायण ने दिया। अन्य वक्ताओं में प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद की सदस्य डॉ. शमिका रवि और ग्रामीण विकास मंत्रालय की पूर्व संयुक्त सचिव सुश्री नीता केजरीवाल शामिल थीं। कार्यक्रम में महिलाओं, विकास और श्रम से संबंधित मुद्दों पर आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. के नेतृत्व पर प्रकाश डाला गया। यह आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. के एक पहल से एक संस्थान में परिवर्तित होने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।

इस नए चरण में, आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. निजी क्षेत्र और उद्योग जगत के नेताओं को शामिल करने के लिए अपने प्रयासों का विस्तार कर रहा है। वे महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण से संबंधित विषयों पर चर्चा कर रहे हैं, जिसका अंतिम लक्ष्य लैंगिक समानता हासिल करना है। इसमें रणनीतिक लक्ष्यों और एक नई कार्य-योजना द्वारा समर्थित एक व्यापक दृष्टिकोण और मिशन विकसित करना शामिल है। इन परिवर्तनों के साथ, आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. को लैंगिक समानता को आगे बढ़ाने के लिए काम करने वाले संस्थान के रूप में पुनः ब्रांडेड किया गया है।

चुप्पी तोड़ना: लिंग आधारित हिंसा के खिलाफ डीएवाई-एनआरएलएम का आंदोलन

जागरूकता, रिपोर्टिंग और निवारण तंत्र के माध्यम से महिलाओं और लैंगिक विविधता वाले व्यक्तियों को सशक्त बनाना

लिंग आधारित हिंसा (जीबीवी) दुनिया भर में एक गंभीर मुद्दा है, जो अपने जीवनकाल में तीन में से एक महिला को प्रभावित करता है। महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ हिंसा उनके कल्याण, व्यक्तिगत विकास और सम्मानपूर्वक जीवन जीने में एक बड़ी बाधा है। शारीरिक या मनोवैज्ञानिक हिंसा बुनियादी मानवाधिकारों का उल्लंघन करती है तथा महिलाओं और लड़कियों को अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने और अपनी पसंद का जीवन जीने से रोकती है। साक्ष्य बताते हैं कि कई महिलाएँ अपने साथ होने वाली हिंसा को पहचान नहीं पाती हैं क्योंकि भेदभाव और हिंसा को सामान्य माना जाता है। अगर वे इसे पहचानती भी हैं, तो शर्म और कलंक से बचने के लिए इसके खिलाफ़ आवाज़ नहीं उठा पाती हैं और बिना कुछ बोले पीड़ा सहती रहती हैं। ज़्यादातर महिलाओं को मदद पाने के तरीके, सेवा प्रदाता या उनके कानूनी अधिकारों के बारे में पता नहीं होता है।

दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (डीएवाई-एनआरएलएम), 2016 से असमानता को दूर करने और विशिष्ट कार्यक्रमों के माध्यम से लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय रूप से काम कर रहा है। ये कार्यक्रम सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित करते हैं और लैंगिक मुद्दों से निपटने के लिए सामुदायिक स्तर की व्यवस्था बनाते हैं। हालाँकि, इन प्रयासों के बावजूद लिंग आधारित हिंसा (जीबीवी) एक बड़ी समस्या बनी हुई है जो महिलाओं और लड़कियों के विकास, कल्याण और सम्मान को नुकसान पहुँचाती है। व्यक्तियों और समाज पर लिंग आधारित हिंसा के गंभीर प्रभाव को देखते हुए, डीएवाई-एनआरएलएम इस समस्या को जड़ से खत्म करने के लिए आवश्यक कार्रवाई करने के लिए प्रतिबद्ध है।

इस उद्देश्य के लिए, डीएवाई-एनआरएलएम ने नवंबर 2022 में लिंग आधारित हिंसा और अन्य लैंगिक मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए "नई चेतना" नामक एक महीने तक चलने वाला वार्षिक लैंगिक अभियान शुरू किया। ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा घोषित इस अभियान का उद्देश्य महिलाओं और अन्य विविध लैंगिक व्यक्तियों को यह समझने में मदद करना है कि लिंग आधारित हिंसा को सार्वजनिक कार्रवाई की आवश्यकता है और इसका समाधान करने के लिए एक मंच बनाना है। यह अभियान 25 नवंबर, 2022 (महिलाओं के खिलाफ हिंसा के उन्मूलन के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस) से शुरू हुआ और 23 दिसंबर, 2022 तक चला। अपने पहले वर्ष में, अभियान पूरे भारत में 35 मिलियन लोगों तक पहुँचा, जिसमें लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण, विशेष रूप से लिंग आधारित हिंसा पर ध्यान केंद्रित किया गया। अभियान ने राज्य सरकारों, मंत्रालयों, जमीनी स्तर के संगठनों और समुदायों को शामिल करते हुए 'जन आंदोलन' के दृष्टिकोण का उपयोग किया। कार्यान्वयन रणनीति ने सुनिश्चित किया कि अभियान दूर-दराज के इलाकों तक पहुंचे ।

पंचवर्षीय अभियान का दूसरा चरण 23 नवंबर, 2023 को शुरू किया गया। इसका लक्ष्य महिलाओं और विविध लैंगिक व्यक्तियों के अधिकारों और शक्तियों का समर्थन करना है, ताकि उन बाधाओं को दूर किया जा सके जो उन्हें भय, भेदभाव और हिंसा के बिना सम्मानजनक जीवन

जीने से रोकती हैं। अभियान की टैगलाइन हैं “सहेंगे नहीं कहेंगे” और “चुप्पी तोड़ेंगे”, जो अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। ग्रामीण विकास और इस्पात राज्य मंत्री श्री फग्गन सिंह कुलस्ते तथा ग्रामीण विकास और उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री साध्वी निरंजन ज्योति ने नई दिल्ली में इस अभियान का उद्घाटन किया। उपस्थित अन्य महत्वपूर्ण लोगों में ग्रामीण विकास सचिव श्री शैलेश कुमार सिंह, ग्रामीण आजीविका के अपर सचिव श्री चरणजीत सिंह, ग्रामीण आजीविका की संयुक्त सचिव सुश्री स्मृति शरण और प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद की सदस्य डॉ. शमिका रवि शामिल थीं। इस कार्यक्रम में राज्य आजीविका मिशन, बैंकिंग समुदाय, विकास साझेदारों, नागरिक समाज संगठनों और देश भर से स्व-सहायता समूहों (एसएचजी) के सदस्यों और गणमान्य व्यक्तियों ने भी भाग लिया।

आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. ने कई महत्वपूर्ण सामग्री तैयार की थी, जिसमें एक वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट, एक वार्षिक स्नैपशॉट कॉफी टेबल बुक और एक वार्षिक वीडियो शामिल थी , जिनके द्वारा अभियान की गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया था।

अभियान का विषय जागरूकता बढ़ाना, रिपोर्टिंग करना, सुरक्षित समाधान और साथ मिलकर काम करना था। *नई चेतना* 2.0 का उद्देश्य **1) जीवन के विभिन्न चरणों और संदर्भों में हिंसा के विभिन्न रूपों को समझना, 2) लिंग आधारित हिंसा रिपोर्टिंग को प्रोत्साहित करना, और 3) सुरक्षित समाधान को सुदृढ़ करने के लिए साथ मिलकर काम करने को बढ़ावा देना है।**

अभियान में राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (एसआरएलएम), सामुदायिक संस्थान, पंचायती राज संस्थान, समुदाय के सदस्य, डीएवाई-एनआरएलएम वर्टिकल, सिविल सोसाइटी संगठन (सीएसओ) और विभिन्न संबंधित मंत्रालयों और विभागों सहित हितधारकों के एक विविध समूह को शामिल किया गया है। आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. ने कई महत्वपूर्ण सामग्री तैयार की है, जिसमें एक वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट, एक वार्षिक स्नैपशॉट कॉफी टेबल बुक और एक वार्षिक वीडियो शामिल है, जिसमें अभियान की गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया है। इसमें अधिकारियों और समुदाय के सदस्यों के साक्षात्कार शामिल किए गए हैं। अभियान के शुभारंभ समारोह में माननीय राज्य मंत्री द्वारा इन सामग्रियों को लॉन्च किया गया। लगातार दो वर्षों तक आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. ने लिंग आधारित हिंसा के लिए निवारण तंत्र पर एक एनिमेटेड वीडियो, केस स्टडी रिपोर्ट, सभी सोशल मीडिया प्रसार पोस्टों के डिजाइन और समन्वय जैसी सहायक सामग्री बनाने के लिए मंत्रालय के साथ गर्व से भागीदारी की और अभियान के सभी डेटा संग्रह, दस्तावेज़ीकरण/ मूल्यांकन रिपोर्ट, वार्षिक स्नैपशॉट वीडियो के लिए उपयोग किए जाने वाले प्रबंधन सूचना प्रणाली (एमआईएस) के ऑनबोर्डिंग के साथ-साथ पर्यवेक्षण का भी नेतृत्व किया।

देखभाल कार्य में उभरती प्राथमिकताएँ: भारत की जी20 अध्यक्षता के लिए अवसर

महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और नीति निर्माण में देखभाल क्षेत्र की चुनौतियों का समाधान और महत्व

देखभाल का कार्य, चाहे वह भुगतान वाला हो या बिना भुगतान वाला, अर्थव्यवस्था और समाज की भलाई और कामकाज के लिए महत्वपूर्ण है। दुनिया भर में देखभाल के काम का एक बड़ा हिस्सा महिलाएँ करती हैं, जो सामाजिक मानदंडों और लिंग के आधार पर श्रम के पारंपरिक विभाजन से प्रभावित हैं। इस स्थिति को अक्सर वैश्विक स्तर पर श्रम बाजार तक पहुँच बनाने में महिलाओं के लिए एक बड़ी बाधा के रूप में देखा जाता है।

जी20 में महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास एजेंडे को तैयार करने के संदर्भ में देखभाल कार्य से जुड़ी विभिन्न चुनौतियाँ सामने आई हैं। भारत की जी20 अध्यक्षता के दौरान जिन प्रमुख मुद्दों को सर्वोच्च प्राथमिकता की आवश्यकता थी, उन्हें एक साथ रखा गया है और इस संक्षिप्त विवरण में चर्चा की गई है, जिसे आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. की नीति और अनुसंधान निदेशक डॉ. सोना मित्रा और आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. की कार्यक्रम प्रबंधक श्रुति कुट्टी ने तैयार किया है। इंस्टीट्यूट फॉर व्हाट वर्क्स टू एडवांस जेंडर इक्वैलिटी (आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई.) ने मानव विकास संस्थान (आईएचडी) के साथ मिलकर मार्च, 2023 में इंडियन सोसाइटी ऑफ लेबर इकोनॉमिक्स (आईएसएलई) सम्मेलन में "भारत की जी20 प्राथमिकताओं में देखभाल कार्य को एकीकृत करना" विषय पर एक गोलमेज चर्चा का आयोजन किया और यह संक्षिप्त विवरण आईएसएलई सम्मेलन में हुई चर्चाओं का परिणाम है। इसमें बताया गया है कि देखभाल अपने आप में एक क्षेत्र है तथा देखभाल के बुनियादी ढांचे की आवश्यकताओं और देखभाल करने वाले कर्मचारियों के लिए निवेश की आवश्यकता है। यह देखभाल कार्य का आकलन करने में माप चुनौतियों पर भी चर्चा करता है, जो अक्सर महिलाओं के योगदान को कम करके आंकता है और राष्ट्रीय सर्वेक्षणों में महिला श्रम बल भागीदारी दर (एफएलएफपीआर) को कम करता है। सभी प्रकार की देखभाल और अवैतनिक गतिविधियों सहित महिलाओं के काम को सटीक रूप से मापना, सूचित नीतिगत निर्णयों और लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है।

पूरी जानकारी के लिए लिंक

बाधाओं को तोड़ना और अंतर को पाटना: भारत के एसटीईएम परिदृश्य में महिलाओं को सशक्त बनाना

भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं के लिए चुनौतियों का समाधान करना और समावेशिता को बढ़ावा देना

"महिलाएं और भावी कामकाज" श्रृंखला का तीसरा संक्षिप्त विवरण 5 अक्तूबर, 2023 को नई दिल्ली के इंडिया हैबिटेट सेंटर में आयोजित शोध और गोलमेज चर्चा पर आधारित था। भारत में, एसटीईएम (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) में महिलाओं और लड़कियों ने हाल ही में उल्लेखनीय प्रगति की है, लेकिन उन्हें अभी भी कई चुनौतियों और असमानताओं का सामना करना पड़ रहा है। यूनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया भर में उच्च शिक्षा में केवल 35 प्रतिशत छात्र महिलाएं हैं। एसटीईएम में यह कम भागीदारी एक वैश्विक समस्या है, जिसमें दुनिया के एसटीईएम शोधकर्ताओं में महिलाओं की संख्या 30 प्रतिशत से भी कम है। 2019 में, भारत में एसटीईएम संकाय में केवल 14 प्रतिशत महिलाएं थीं।

यह देखते हुए कि श्रम बाजार लगातार बदल रहा है और विकसित हो रहा है, विशेषकर ऑटोमेशन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के कारण। एसटीईएम शिक्षा महिलाओं को उपयोगी कौशल प्रदान करके इन परिवर्तनों के साथ तालमेल बनाए रखने में मदद करती है। भारत में, 2020 में कोविड-19 महामारी शुरू होने के बाद से, एसटीईएम और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में नौकरियों में क्रमशः लगभग 37% और 38% की वृद्धि हुई है। रोजगार के अवसरों के अलावा, एसटीईएम, शिक्षा मानव विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। यह व्यावहारिक शिक्षा के माध्यम से तार्किक तर्क जैसे कौशल सिखाता है, जिससे बच्चों को कई तरह के कौशल और जटिल वास्तविक जीवन की समस्याओं को हल करने की क्षमता वाले वयस्क बनने में मदद मिलती है।

इसके अलावा, एसटीईएम शिक्षा जलवायु संकट जैसे प्रमुख मुद्दों से निपटने के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है। जब महिलाएं नीतियों और समाधानों को बनाने में मदद करने के लिए अपने एसटीईएम और समस्या-समाधान कौशल का उपयोग करती हैं, तो इन मुद्दों पर प्रतिक्रिया महिलाओं की ज़रूरतों और दृष्टिकोणों पर बेहतर ढंग से विचार कर सकती है। दुनिया भर में, एसटीईएम में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने से अधिक संतुलित वातावरण बनाने में मदद मिल सकती है। इससे पुरुषों और महिलाओं के बीच कौशल अंतर को कम किया जा सकता है, महिलाओं की रोज़गार दर में सुधार किया जा सकता है और लिंग के आधार पर रोजगार के विभाजन को कम किया जा सकता है।

कुल मिलाकर, जबकि भारत में महिलाओं और लड़कियों को एसटीईएम में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने में प्रगति हुई है, इन क्षेत्रों में लैंगिक समानता हासिल करने के लिए और अधिक काम करने की आवश्यकता है। एसटीईएम में महिलाओं के लिए बाधाओं को दूर करना और एक अनुकूल वातावरण बनाए रखना बहुत महत्वपूर्ण है। ऐसा करने से उन्हें अपनी पूरी क्षमता का दोहन करने तथा भारत के विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में नई खोज और प्रगति को आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी।

पूरी जानकारी के लिए लिंक

प्रशिक्षुता में लैंगिक अंतर को कम करना: समावेशी कौशल विकास के लिए रणनीतियाँ

प्रशिक्षुता कार्यक्रमों में बढ़ी हुई भागीदारी के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए रणनीतियाँ और सिफारिशें

राष्ट्रीय प्रशिक्षुता संवर्धन योजना (एनएपीएस) और राष्ट्रीय प्रशिक्षु प्रशिक्षण योजना (एनएटीएस) कौशल विकास में सुधार और रोजगार के अवसरों को बढ़ाने के लिए सरकारी कार्यक्रम बनाए गए हैं। हालाँकि, हाल ही में एनएपीएस के आंकड़ों से पता चलता है कि लगभग 70-75% प्रशिक्षु पुरुष हैं, जो कार्यक्रम में लिंग संतुलन की कमी को दर्शाते हैं। यह संक्षिप्त विवरण शोध और 13 जुलाई, 2023 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित एक गोलमेज चर्चा पर आधारित है। इस लिंग अंतर को कम करने के लिए, गोलमेज में कई सिफारिशें प्रस्तावित की गईं।

सबसे पहले, लिंग के आधार पर अलग-अलग डेटा इकट्ठा करने से हमें महिलाओं के नज़रिए से कौशल विकास को समझने में मदद मिल सकती है। इसमें उनकी ज़रूरतों, चुनौतियों और अवसरों को बेहतर ढंग से समझना शामिल है।

दूसरा, नियोक्ताओं को अधिक महिला प्रशिक्षुओं को नियुक्त करने के लिए प्रोत्साहित करना और अतिरिक्त भत्ते प्रदान करना महिला भागीदारी को बढ़ाने में मदद कर सकता है। उदाहरण के लिए, तंजानिया में, अवसंरचना इंजीनियर्स प्रशिक्षु कार्यक्रम (एसईएपी) ने महिला प्रतिभागियों को निर्वाह भत्ते, अतिरिक्त प्रशिक्षण और मेंटरशिप के अवसर प्रदान किए। पेशेवर पंजीकरण प्राप्त करने के बाद, उन्हें समर्थन मिलना जारी रहा। डेटा बताते हैं कि जिन महिला प्रशिक्षुओं को वित्त-पोषण और अतिरिक्त सहायता मिली, उनकी पूर्णता दर 86% थी, जबकि खुद से वित्त-पोषण करने वाले लोगों के लिए यह 20% थी।

तीसरा, महिलाओं को ध्यान में रखकर चलाए जाने वाले जागरूकता अभियान प्रशिक्षुता कार्यक्रमों में उनकी समझ और रुचि बढ़ाने में मदद कर सकते हैं। सामाजिक बाधाओं को दूर करने के लिए, बुनियादी स्तर से कौशल विकास तक का दृष्टिकोण बेहतर परिणाम दे सकता है। इस रणनीति में स्थानीय स्कूल और कॉलेज के नेताओं के साथ-साथ स्वयं सहायता समूह के नेताओं को शामिल किया जा सकता है, ताकि महिलाओं को प्रशिक्षु के रूप में पंजीकृत करने में मदद की जा सके। सूचना अभियानों के लिए स्थानीय सोशल मीडिया प्रभावितों को भी शामिल किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, वे पुरुष-प्रधान क्षेत्रों में काम करने वाली महिलाओं के बारे में रूढ़िवादी धारणा को तोड़ने में मदद कर सकते हैं और परिवारों को नौकरी की तलाश कर रही महिलाओं का समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।

चौथा, लिंग-संवेदनशील बुनियादी ढाँचा बनाना और महिलाओं की भागीदारी में बाधा डालने वाले सामाजिक मानदंडों को संबोधित करना एक अधिक समावेशी वातावरण बनाएगा। महिला प्रशिक्षुओं को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें काम के लिए दूरदराज के स्थानों पर यात्रा करते समय परिवहन के विकल्पों की कमी, कार्यस्थल पर पर्याप्त, कार्यात्मक शौचालयों का अभाव, उनके प्रशिक्षुता के दौरान परामर्श और अभिविन्यास की कमी, पारिवारिक जिम्मेदारियों और बच्चों की देखभाल के दायित्वों के साथ-साथ काम को संभालने में कठिनाइयाँ और कार्यस्थलों को पुरुष-प्रधान के रूप में देखना शामिल है, जहाँ महिलाओं की तुलना में पुरुष प्रशिक्षक अधिक हैं।

अंत में, एनएपीएस को नए देश स्टैक पोर्टल में एकीकृत करने से महिलाओं के लिए नौकरी के अवसर ढूँढना और रोजगार हासिल करना आसान हो सकता है। इन सिफारिशों को लागू करने से एक अधिक जेंडर-समावेशी प्रशिक्षुता प्रणाली बनेगी, जिससे महिलाओं को आर्थिक विकास और समृद्धि में योगदान करने में मदद मिलेगी।

प्रशिक्षुता कार्यक्रमों को महिलाओं की ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील बनाना और उनकी भागीदारी को प्रोत्साहित करना बहुत महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न क्षेत्रों और उद्योगों में उपलब्ध प्रशिक्षुता की संख्या और विविधता का विस्तार करना भी महत्वपूर्ण है।

इस विषय पर अधिक जानकारी प्राप्त करने, प्रशिक्षुता के अवसरों बेहतर बनाने, समान भागीदारी को बढ़ावा देने, विशेष रूप से विभिन्न क्षेत्रों और उद्योगों में प्रशिक्षुता के दायरे का विस्तार करने तथा सभी जेंडरों के लिए अधिक समान भागीदारी सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित करने संबंधी सिफारिशों का पूरा विवरण देखने के लिए कृपया प्रशिक्षुता संक्षिप्त विवरण लिंक देखें।

पूरी जानकारी के लिए लिंक

डीएवाई-एनआरएलएम के तहत लिंग आधारित हिंसा से निपटने के लिए संस्थागत तंत्र को सुदृढ़ करना: चौथे लैंगिक संवाद से प्राप्त जानकारी

चौथा जेंडर संवाद 22 सितंबर, 2023 को हुआ और इसका आयोजन दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (डीएवाई-एनआरएलएम) और इंस्टीट्यूट फॉर व्हाट वर्क्स टू एडवांस जेंडर इक्वैलिटी (आईडब्ल्यूडब्ल्यूएजीई) द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस वर्चुअल कार्यक्रम में 91,000 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें विभिन्न मंत्रालयों के वरिष्ठ अधिकारी, राज्य सरकार के अधिकारी, चिकित्सक, लिंग विशेषज्ञ, शिक्षाविद, नागरिक समाज के प्रतिनिधि, समुदाय के सदस्य और स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के सदस्य शामिल थे।

मुख्य वक्ता ग्रामीण विकास मंत्रालय के अपर सचिव श्री चरणजीत सिंह ने कार्यक्रम के दौरान लिंग आधारित हिंसा (जीबीवी) के आंकड़ों पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने इस मुद्दे से निपटने में समुदाय आधारित संस्थाओं के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने जागरूकता और संवेदनशीलता पहलों को बेहतर बनाने के लिए मंत्रालयों, विशेष रूप से सूचना एवं प्रसारण और शिक्षा मंत्रालयों के बीच सहयोग की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

डीएवाई-एनआरएलएम की संयुक्त सचिव सुश्री स्मृति शरण ने महिलाओं को सशक्त बनाने और ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की समस्याओं का समाधान करने वाले मॉडल संस्थान बनाने के लिए संगठन के प्रयासों पर प्रकाश डाला। इसमें लैंगिक संसाधन केंद्र (जीआरसी) जैसी पहल शामिल हैं। झारखंड, केरल और ओडिशा जैसे राज्यों के सामुदायिक संसाधन व्यक्तियों ने लिंग आधारित हिंसा (जीबीवी) से निपटने के लिए संस्थागत रणनीतियों के साथ अपने अनुभव साझा किए। ओडिशा की सुश्री रजनी दंडसेना ने ग्राम पंचायत स्तर पर प्रेरणा केंद्रों (जीआरसी) के प्रभावी कामकाज पर चर्चा की। इन केंद्रों ने मजबूत विभागीय संबंधों और व्यापक जागरूकता अभियानों के माध्यम से हिंसा के विभिन्न मामलों को सफलतापूर्वक संभाला है।

इस कार्यक्रम में महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के प्रतिनिधियों, लिंग विशेषज्ञों और महिला अधिकार वकीलों के साथ एक पैनल चर्चा भी शामिल थी। उन्होंने राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (एसआरएलएम), कानूनी समाधान, लिंग प्रशिक्षण और मंत्रालयों के बीच सहयोग के महत्व पर प्रकाश डाला। चर्चा में स्थिरता के लिए अभिनव वित्तपोषण, शक्ति सदन और अल्पावास गृह जैसे सुरक्षित स्थानों की स्थापना और डेटा-संचालित शासन और महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में सुधार जैसे विषयों को शामिल किया गया। सत्र में मिशन शक्ति के तहत नारी अदालतों और डीएवाई-एनआरएलएम के तहत लिंग संसाधन केंद्रों (जीआरसी) के बीच समन्वय की क्षमता पर जोर दिया गया।

जेंडर संवाद 2023 का समापन सभी से निवारक उपायों, सहयोग और रचनात्मक स्थानीय समाधानों का उपयोग करके महिलाओं के मुद्दों से निपटने के लिए मिलकर काम करने के आह्वान के साथ हुआ।

पूरी जानकारी के लिए लिंक

नीति आयोग और आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. द्वारा नारी शक्ति: महिला-नेतृत्व वाले विकास की ओर विषय पर जी20 कार्यशाला का आयोजन

8 नवंबर, 2023 को, नई दिल्ली में "नारी शक्ति: महिला-नेतृत्व विकास की ओर" विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गई, जिसका आयोजन नीति आयोग ने इंस्टीट्यूट ऑफ व्हाट वर्क्स टू एडवांस जेंडर इक्वैलिटी (आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई.) के सहयोग से किया गया। यह कार्यशाला नई दिल्ली लीडर्स डिक्लेरेशन 2023 (एनडीएलडी 2023) में उल्लिखित कार्य योजनाओं को लागू करने पर केंद्रित एक श्रृंखला का हिस्सा थी।

मुख्य विषय और चर्चाएँ

1. महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण को बढ़ाना:
    - कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने तथा घरेलू और देखभाल के काम में लैंगिक असमानताओं को दूर करने पर ध्यान केंद्रित करना।
    - गिग इकॉनमी, लैंगिक कौशल अंतर को कम करने और सहायक कार्यस्थलों को बढ़ावा देने पर चर्चा करना।
    - महिला कार्यबल को बढ़ाने और बनाए रखने में निजी क्षेत्र की भूमिका पर जोर देना।
2. महिला समूहों को सुदृढ़ बनाना:
    - स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) और महिला नेतृत्व वाले किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं और स्थापित रणनीतियों को साझा करना।
    - आर्थिक सशक्तीकरण को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण महिलाओं में नेतृत्व क्षमता विकसित करना।
3. डिजिटल और कौशल अंतर को पाटना:
    - डिजिटल अर्थव्यवस्था में सुरक्षित और समावेशी भागीदारी के लिए डिजिटल कौशल और बुनियादी ढांचे तक महिलाओं की पहुँच बढ़ाना।
    - गैर-पारंपरिक क्षेत्रों में महिलाओं की उद्यमशीलता और भागीदारी को बढ़ावा देना।
4. महिला सशक्तिकरण के लिए कानूनी सुरक्षा उपाय:
    - बेहतर सार्वजनिक बुनियादी ढांचे और लैंगिक समानता का समर्थन करने वाले कानूनों के प्रभावी कार्यान्वयन के माध्यम से महिलाओं की सुरक्षा को प्राथमिकता देना।
    - साक्ष्य के आधार पर नीतियों को सूचित करने के लिए लिंग-विशिष्ट डेटा विकसित करना।

उद्घाटन भाषण और मुख्य निष्कर्ष

- डॉ. वी.के. पॉल, सदस्य, नीति आयोग ने महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कार्यबल में महिलाओं की कम भागीदारी और इसे सुधारने के लिए अनुकूल वातावरण बनाने की आवश्यकता की ओर ध्यान आकृष्ट किया।
- डॉ. प्रीतम बी. यशवंत, संयुक्त सचिव, महिला और बाल विकास मंत्रालय ने विकास में महिलाओं की सक्रियता की ओर बदलाव और महिलाओं के नेतृत्व वाली पहलों के महत्व पर जोर दिया, जिसे सार्वजनिक भागीदारी के माध्यम से प्रदर्शित किया गया।
- डॉ. संध्या पुरेचा, अध्यक्ष, डब्ल्यू20 इंडिया ने निष्पक्ष और समान समाज के लिए महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास को बढ़ावा देने की नैतिक जिम्मेदारी पर जोर दिया।

परिणाम

कार्यशाला में विशेषज्ञों, शिक्षाविदों, नागरिक समाज और थिंक टैंकों को एक साथ लाया गया ताकि पूर्ण लैंगिक समानता और सशक्तिकरण प्राप्त करने के लिए एक योजना बनाई जा सके। इसमें महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास का समर्थन करने के लिए बहुआयामी रणनीतियों, विभिन्न सरकारी मंत्रालयों के बीच सहयोग और समुदाय-आधारित तरीकों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया।

निष्कर्ष

“नारी शक्ति: महिला-नेतृत्व विकास की ओर” विषय पर कार्यशाला ने महिला सशक्तीकरण के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करने, राष्ट्रीय लक्ष्यों को वैश्विक प्राथमिकताओं के साथ सामंजस्य स्थापित करने तथा लैंगिक समानता के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को मजबूत करने के लिए महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया।

READ THE ARTICLE HERE

ग्रामीण विकास मंत्रालय और आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. ने संयुक्त रूप से जेंडर संसाधन केंद्र पर दो दिवसीय परामर्श कार्यशाला का आयोजन किया।

ग्रामीण विकास मंत्रालय और ग्रामीण विकास मंत्रालय और आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. ने संयुक्त रूप से 27 और 28 जुलाई, 2023 को नई दिल्ली में जेंडर संसाधन केंद्र पर दो दिवसीय परामर्श कार्यशाला का आयोजन किया। अपने मुख्य भाषण में ग्रामीण विकास मंत्रालय के अपर सचिव श्री चरणजीत सिंह ने बताया कि 2016 से डीएवाई एनआरएलएम का उद्देश्य महिलाओं की आवाज़, पसंद और एजेंसी को मज़बूत करने के लिए कार्यक्रम में लैंगिक मुद्दों को शामिल करना है। जेंडर विशिष्ट अधिकारों और पात्रता के मुद्दों से निपटने के लिए, विभिन्न प्रकार के जटिल मामलों के समाधान के लिए जेंडर संसाधन केंद्र जैसी संरचना स्थापित करने की आवश्यकता महसूस की गई, जो अन्य विभागों के साथ परस्पर संबंध बनाने की अपेक्षा करते हैं।

कार्यशाला की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हुए, संयुक्त सचिव श्रीमती स्मृति शरण ने बताया कि डीएवाई-एनआरएलएम ने देश में एक मौन क्रांति की शुरुआत की है और इसका परिवर्तनकारी दृष्टिकोण महिलाओं के नेतृत्व वाली और महिलाओं के स्वामित्व वाली संस्थाओं के निर्माण के सिद्धांतों पर आधारित है। उन्होंने बताया कि डीएवाई-एनआरएलएम कार्यक्रम के दो मूल सिद्धांत ग्रामीण गरीब महिलाओं का सामाजिक सशक्तिकरण और आर्थिक सशक्तिकरण हैं। संयुक्त सचिव ने यह भी उल्लेख किया कि लिंग संसाधन केंद्रों (जीआरसी) की स्थापना कार्यक्रम के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही है, जो महिला सशक्तिकरण के लिए डीएवाई-एनआरएलएम की प्रतिबद्धता की पुष्टि करती है। क्रेआ विश्वविद्यालय में लीड की कार्यकारी निदेशक सुश्री शेरोन बुटेउ ने हस्तक्षेपों के लिए प्रमुख तत्वों की पहचान करने में साक्ष्य निर्माण के महत्व पर जोर दिया।

कार्यशाला में 15 राज्यों से कुल 75 प्रतिभागियों के साथ-साथ सीएसओ भागीदारों और लिंग विशेषज्ञों ने भाग लिया। चर्चा समूह कार्य के माध्यम से जेंडर संसाधन केंद्र को मजबूत करने पर केंद्रित थी। असम, मध्य प्रदेश, झारखंड, ओडिशा, नागालैंड, बिहार, आंध्र प्रदेश, पुडुचेरी, राजस्थान, केरल, तेलंगाना, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और त्रिपुरा जैसे राज्यों के प्रतिभागियों द्वारा साझा किए गए बहुमूल्य अनुभवों ने देश में जेंडर संसाधन केंद्र को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक प्रयासों पर प्रकाश डाला।

अपने समापन भाषण में संयुक्त सचिव श्रीमती स्मृति शरण ने कहा कि चर्चाओं से हमें जीआरसी के वर्तमान दायरे और आगे के काम को समझने में मदद मिली। उन्होंने कहा कि यदि जीआरसी को ब्लॉक स्तर पर शीर्ष सामुदायिक संस्थानों के रूप में देखा जाता है, तो उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होनी चाहिए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जीआरसी केवल मामलों का समाधान करने से कहीं अधिक है; उनका उद्देश्य एक व्यापक दृष्टिकोण के माध्यम से लैंगिक असमानता का मुकाबला करना है।

इंस्टीट्यूट फॉर व्हाट वर्क्स टू एडवांस जेंडर इक्वैलिटी (आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई.) और भारतीय महिला अध्ययन संघ (आईएडब्ल्यूएस) ने भारत में देखभाल कर्मियों की आवाज़ को मज़बूत करने पर पैनल बनाया

7 सितंबर, 2023 को, इंस्टीट्यूट फॉर व्हाट वर्क्स टू एडवांस जेंडर इक्वैलिटी (आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई.) ने केरल के तिरुवनंतपुरम में अपने 17वें राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान भारतीय महिला अध्ययन संघ (आईएडब्ल्यूएस) के साथ सहयोग किया। पैनल चर्चा में देखभाल क्षेत्र में महिला कर्मियों पर ध्यान केंद्रित किया गया, जो अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण लेकिन अक्सर अनदेखा किया जाने वाला खंड है। रितु दीवान (उपाध्यक्ष, आईएसएलई) की अध्यक्षता में और बिदिशा मोंडल (क्रेया विश्वविद्यालय में आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई.-लीड की रिसर्च फेलो) द्वारा प्रस्तुत पैनल में डॉ. दीपा सिन्हा, सोनिया जॉर्ज, किरण मोघे और एआर सिंधु शामिल थे। सत्र का समापन इशिता मुखोपाध्याय (अध्यक्ष, आईएडब्ल्यूएस) की टिप्पणियों के साथ हुआ। चर्चा में विशेष रूप से ग्रामीण भारत में देखभाल कर्मियों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया और उनके सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान किया गया, जिसमें अवैतनिक और कम वेतन वाला श्रम और औपचारिक रोजगार मान्यता की कमी शामिल है। चर्चा की गई एक उल्लेखनीय उपलब्धि देखभाल कर्मियों के बीच यूनियन गतिविधियों का बढ़ना था, जिसने श्रम अधिकारों के लिए उनकी लड़ाई में योगदान दिया।

पैनल चर्चा के बाद प्रश्नोत्तर सत्र में कई महत्वपूर्ण मुद्दे सामने आए। इनमें बुजुर्गों की देखभाल, घरेलू कामगारों द्वारा अनुभव किए जाने वाले यौन उत्पीड़न, देखभाल करने वालों पर नई तकनीकों के प्रभाव और कोविड-19 महामारी के दौरान भेदभाव से जुड़ी चिंताएँ शामिल थीं। इन चर्चाओं ने देखभाल करने वालों का समर्थन करने के लिए बेहतर नीतियों और प्रणालियों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने इन ज़रूरी मामलों पर अधिक बातचीत और कार्रवाई के लिए एक मूल्यवान अवसर प्रदान किया। सम्मेलन ने यूनियनों और नीतिगत बदलावों के माध्यम से देखभाल करने वालों को मान्यता देने और उन्हें सशक्त बनाने के महत्व पर जोर दिया ताकि उनके कल्याण और अधिकारों में प्रभावी रूप से सुधार हो सके।

महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए प्रौद्योगिकी आधारितदृष्टिकोण – आईएएफएफई 2023 में सफलताएँ और चुनौतियाँ

प्रौद्योगिकी श्रम बाजार में महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने और उनकी आय बढ़ाकर, पैसे कमाने के अवसर पैदा करके और सार्वजनिक सेवाओं और सामाजिक सुरक्षा तक पहुँच में सुधार करके उन्हें सशक्त बनाने की महत्वपूर्ण क्षमता प्रदान करती है। यह कोविड-19 के बाद की दुनिया में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जहाँ प्रौद्योगिकी को महिला श्रमिकों के सामने आने वाली चुनौतियों के समाधान के रूप में देखा जाता है। नए उभरते डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म ने महिलाओं के लिए आर्थिक रूप से जुड़ने के नए अवसर खोले हैं। इन प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग सरकारी सेवाएँ देने, सेवा वितरण को ट्रैक करके शासन को बढ़ाने और सूचना, सेवाओं और बाज़ारों तक पहुँचने के नए तरीके प्रदान करके कार्यक्रमों की प्रभावशीलता में सुधार करने के लिए किया जाता है। वे महिलाओं को प्रौद्योगिकी और डिजिटल प्रणालियों में और अधिक एकीकृत करने, उनके जीवन, कार्य और कल्याण को बेहतर बनाने के अवसर भी प्रदान करते हैं।

इस सत्र में भारत में महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को सक्षम करने वाले डिजिटल प्रौद्योगिकी के विभिन्न रूपों पर चार प्रस्तुतियाँ शामिल की गईं। इन शोधपत्रों में प्रौद्योगिकी आधारित दृष्टिकोण का आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया तथा डिजिटल अर्थव्यवस्था में महिलाओं को एकीकृत करने की सफलताओं, चुनौतियों और कमियों पर प्रकाश डाला गया। पहले दो शोधपत्रों में महिला श्रमिकों की स्थितियों और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से काम को व्यवस्थित करने के नए तरीकों का पता लगाया गया। उन्होंने कर्मचारियों/भागीदारों और नियोक्ताओं दोनों के दृष्टिकोण प्रदान किए, घरेलू काम, सौंदर्य सेवाएँ, ई-कॉमर्स, खाद्य वितरण और शिक्षा सेवाओं जैसे क्षेत्रों में ताकत और कमज़ोरियों पर चर्चा की। तीसरे शोधपत्र में इस बात पर ध्यान केंद्रित किया गया कि कैसे डिजिटलीकृत दृष्टिकोण आवश्यक सामाजिक सुरक्षा उपायों की अंतिम-मील डिलीवरी में सुधार करते हैं और महिलाओं पर उनका क्या प्रभाव पड़ता है। अंतिम शोधपत्र में इस बात की जाँच की गई कि डेटा संग्रह और सेवा वितरण के लिए डिजिटलीकृत प्रथाओं को अपनाने के कारण भारत में मान्यता-प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं (आशा) कार्यकर्ताओं की भूमिकाएँ कैसे बदल गई हैं। इन शोधपत्रों ने अपने अध्ययन करने के लिए गुणात्मक और मात्रात्मक तरीकों के मिश्रण का उपयोग किया।

आईएचडी ग्लोबल कॉन्क्लेव 2024 में “ग्लोबल साउथ में महिलाओं के काम को आगे बढ़ाना: महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता की ओर” पर पैनल

आईडब्ल्यूडब्ल्यूएजीई ने नीति आयोग के साथ मिलकर 12 जनवरी, 2024 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में मानव विकास संस्थान द्वारा आयोजित ग्लोबल कॉन्क्लेव में “ग्लोबल साउथ में महिलाओं के काम को आगे बढ़ाना: महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता की ओर” पर एक पैनल का आयोजन किया। पैनल की अध्यक्षता डॉ. सोनाली देसाई ने की और इसमें वक्ताओं के एक विविध समूह द्वारा प्रस्तुतियां दी गईं, जिसमें वैश्विक स्तर पर महिलाओं के काम से जुड़े जटिल परिदृश्य का व्यापक चित्रण पेश किया गया। नीति आयोग की वरिष्ठ विशेषज्ञ साक्षी खुराना ने कार्यबल में पुरुषों और महिलाओं की भागीदारी के बीच अंतर पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि महिलाएं अक्सर पुरुषों की तुलना में कम कमाती हैं और उच्च पदों पर आसीन होने की संभावना कम होती है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि कैसे डिजिटल तकनीक इस स्थिति को बेहतर बना सकती है, जिससे महिलाओं के लिए अवसरों में सुधार हो सकता है। वेई-जून जीन येंग ने एशिया-प्रशांत क्षेत्र पर विस्तृत जानकारी दी, आर्थिक बदलावों, पुरुषों और महिलाओं की तुलना और महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं पर चर्चा की। मरीना डुरानो ने देखभाल के काम की संवैधानिक मान्यता पर गहनता से चर्चा की, और बताया कि देखभाल अर्थव्यवस्था का विचार लोगों के काम करने के अधिकारों को कैसे प्रभावित करता है। सोना मित्रा ने बताया कि भारत में अब कितनी कम महिलाएँ काम कर रही हैं। उन्होंने बताया कि महिलाएँ अक्सर अलग-अलग तरह के काम करती हैं, जैसे दूसरों की देखभाल करना या मुफ़्त में काम करना। क्योको कुसाकाबे ने यह देखने के लिए थाईलैंड का अध्ययन किया कि मशीनों और कंप्यूटर जैसी नई तकनीकें काम पर महिलाओं को कैसे प्रभावित करती हैं। ग्रेस वामु-नगारे ने बताया कि कैसे उप-सहारा अफ्रीका में पुरुषों और महिलाओं के साथ समान व्यवहार नहीं किया जाता है। उन्होंने इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि कैसे केन्या में कु-वी हब महिलाओं को सफल होने से रोकने वाली बाधाओं को तोड़कर उन्हें अधिक आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने में मदद करने की कोशिश कर रहा है। इन प्रस्तुतियों ने यह दर्शाया कि महिलाओं को अर्थव्यवस्था में भाग लेने में मदद करने के लिए प्रत्येक स्थान के लिए सावधानीपूर्वक योजनाएँ बनाना वास्तव में महत्वपूर्ण है। उन्होंने माना कि विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं को अलग-अलग समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो दुनिया भर में कई मायनों में एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं।

एक्सेस आजीविका शिखर सम्मेलन 2024 में आर्थिक परिणामों में सुधार के लिए नेतृत्व में महिलाओं को बढ़ावा देना

आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. आजीविका भारत शिखर सम्मेलन 2024 के दौरान, इंस्टीट्यूट फॉर व्हाट वर्क्स टू एडवांस जेंडर इक्वैलिटी (आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई.) ने 18 जनवरी, 2024 को नई दिल्ली में आर्थिक परिणामों में सुधार के लिए नेतृत्व में महिलाओं को बढ़ावा देने पर एक पैनल चर्चा सत्र आयोजित किया। इस सत्र में आर्थिक परिणामों को बेहतर बनाने के लिए नेतृत्व की भूमिकाओं में महिलाओं को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया गया। इसमें नेतृत्व में महिलाओं के महत्व के बारे में बात की गई और संगठनों द्वारा महिलाओं को अधिक बार नेतृत्व करने में मदद करने के तरीके साझा किए गए।

महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास को आगे बढ़ाने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, हमें कई मोर्चों पर ठोस प्रयास करने की जरूरत है। महिलाओं को नेतृत्व की भूमिकाएँ निभाने में मदद करने से नारीवाद के नए विचारों का उपयोग करके अर्थव्यवस्था में महिलाओं के प्रदर्शन में बड़ा बदलाव लाया जा सकता है।

भारत में शीर्ष पदों पर महिलाओं की संख्या बहुत कम है। उदाहरण के लिए, दासरा की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि यहाँ स्वास्थ्य सेवा में महिलाओं की संख्या केवल 18% है। वे समान भूमिकाओं में पुरुषों की तुलना में 34% कम कमाती हैं। ग्रांट थॉर्नटन के एक अन्य सर्वेक्षण में पाया गया कि मध्यम आकार की भारतीय कंपनियों में 36% शीर्ष पदों पर महिलाएँ हैं। अधिक महिलाओं को नेतृत्व की भूमिकाओं में शामिल होने में मदद करना महत्वपूर्ण है। यह केवल निष्पक्ष होने और सभी को शामिल करने के बारे में नहीं है, बल्कि नेतृत्व करने के अलग-अलग तरीकों को अपनाने के बारे में भी है जो पुराने तरीकों से अलग हैं।

राजनीति, अर्थशास्त्र, वित्त, व्यवसाय, सामाजिक क्षेत्रों आदि में महिला नेताओं को सक्षम बनाना, लिंग-संवेदनशील तंत्रों को संस्थागत बनाने के लिए महत्वपूर्ण है जो अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की जरूरतों को पूरा करते हैं तथा पुरुषों और महिलाओं के बीच के अंतर को कम करने में मदद करते हैं। जब महिलाएं नेतृत्व करती हैं, तो वे अक्सर ऐसी व्यवस्था बनाती हैं जो सुनिश्चित करती है कि महिलाओं को शामिल किया जाए और उनका समर्थन किया जाए, न केवल उनके काम में बल्कि उन जगहों पर भी जहां देखभाल महत्वपूर्ण है।

इस पैनल का उद्देश्य 'महिलाओं द्वारा नेतृत्व करने' संबंधी मौजूदा चर्चा में योगदान देना था, इसमें संगठनात्मक रणनीतियों, बाजार-आधारित दृष्टिकोणों को कवर करने वाले उपायों को उजागर करना और महिलाओं के नेतृत्व को गति देने वाले चुनिंदा क्षेत्रों से मौजूदा ज्ञान और सर्वोत्तम प्रथाओं को सामने लाना था।

उत्पादों का प्रदर्शन

नारीवादी नीति समूह (राष्ट्रीय-स्तरीय गठबंधन):

आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. नारीवादी नीति समूह (एफपीसी) की संचालन समिति में शामिल है। आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. 2019 से एफपीसी के सहयोग से केंद्रीय बजट के लिए सिफारिशें प्राप्त करने के लिए बजट-पूर्व परामर्श बैठकें आयोजित कर रहा है। हम आने वाले वर्ष में भी ऐसा करने की योजना बना रहे हैं।

एशिया नारीवादी गठबंधन (क्षेत्रीय गठबंधन):

गठबंधन द्वारा पहचानी गई प्राथमिकताओं में अवैतनिक और देखभाल कार्य, लिंग उत्तरदायी बजट और जलवायु न्याय शामिल हैं। आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. आगामी वर्ष में संवाद के लिए पैनल चर्चा और अन्य मंच तैयार करने में गठबंधन के सदस्यों के साथ सहयोग कर रहा है; उदाहरण के लिए काठमांडू, नेपाल में विश्व सामाजिक मंच 2024 और बैंकॉक, थाईलैंड में एडब्ल्यूआईडी के 15वें अंतर्राष्ट्रीय मंच पर, जो दिसंबर 2024 में होने वाला है।

प्रोस्पर (डब्ल्यूईई पर वैश्विक गठबंधन):

आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. ने जी20 प्रक्रिया में शामिल होने के लिए रणनीति बनाने के लिए वीप्रोस्पर और एशिया फाउंडेशन के साथ मिलकर काम करने की योजना बनाई है। वे सितंबर 2023 में जी20 शिखर सम्मेलन में अवैतनिक देखभाल कार्य को उजागर करने पर ध्यान केंद्रित करेंगे। इसके अलावा, तकनीकी कार्य समूह के सह-अध्यक्ष के रूप में, आई. डब्ल्यू. डब्ल्यू. ए. जी. ई. बैठकों को व्यवस्थित करने और चलाने, अपने शोध को साझा करने और महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण (डब्ल्यूईई) को बढ़ावा देने में अपनी भूमिका को मजबूत करने के लिए नीतिगत संक्षिप्त विवरण लिखने में मदद करेगा।

If you are unable to access any document, please visit our resource section at www.iwwage.org

IWWAGE
Institute for What Works to Advance Gender Equality

LEAD
LEVERAGING EVIDENCE FOR ACCESS AND DEVELOPMENT
KREA UNIVERSITY

IWWAGE is an initiative of LEAD at Krea University. LEAD is a part of IFMR Society with strategic oversight from Krea University.

M-6, 2nd Floor, Hauz Khas, New Delhi – 110 016, India